International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 03-05

जीवन की शुचिता का धर्म: श्रेष्ठ मानव व्यवहार का योगदान - आत्मिक पवित्रता के संबंध में एक विशिष्ट अध्ययन

मेधावी शुक्ला

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में मानव की सम्पूर्णता के विराट स्वरुप का अत्यंत ही सात्विक तरीके से वर्णन किया गया है जिसमें जीवन की शुचिता को बनाये रखने के पवित्रतम भाव को अक्षुण्य रखने की निजी जिम्मेदारी से जुड़े कर्तव्य बोध को प्रमुख तथ्य के रूप में प्रकट किया गया है। अंतर्मन की जीवंत अभिप्रेरणा व्यक्तिगत जीवन के भीतर सामान्यत: नैतिकता के बल को स्थापित कर देती है जिसके परिणाम श्रेष्ठ मानव व्यवहार के रूप में परिलक्षित होते हैं जो आत्मिक पवित्रता का प्रमुख कारक बनकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सामाजिक जीवन में निष्ठा से निभाते हैं। स्वयं के प्रति अहिंसक व्यवहार की परिकल्पना जब जीवन के धर्म - कर्म से सम्बद्ध होकर आंतरिक एवं बाह्य जगत को सद्व्यवहार की उज्ज्वलता से पोषित करने में सफल हो जाती है तब व्यक्तिगत पुण्यों की पूंजी को स्थायी रूप से स्वीकार कर लिया जाता है। जीवन की शुचिता का नैसर्गिक धर्म मूलतः आत्मा की पवित्रता से सबंधित होता है जो जीवन के मर्म को संवेदनशील अभिव्यक्ति द्वारा मानव कल्याण के लिए समर्पित कर देने की महान परम्परा से सम्बद्ध होकर सदा गतिशील रहता है। आत्मिक पवित्रता के संदर्भ का सूक्ष्म विश्लेषण उन स्थितियों में मुखरित होता है जब जीवन की सात्विकता के अध्यात्म का नवीनतम अध्याय श्रेष्ठ मानव व्यवहार की प्रासंगिकता को बहुआयामी स्वरुप करके जीवन की शुचिता को अक्षुण्य बनाये रखने में सफलता प्राप्त कर लेता है। यह शोध आलेख मानवीय संवेदनशीलता से सम्बद्ध गरिमा को उसके वास्तविक स्वरुप में स्थापित कर जीवन की शुचिता को श्रेष्ठ मानव व्यवहार के विशिष्ट योगदान से निरुपित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा जिससे आत्मिक पवित्रता के स्वरुप की व्यावहारिकता व्यक्तिगत जीवन में सदैव अखंडित बनी रहेगी।

मूल शब्द : जीवन की शुचिता, कर्तव्य बोध, व्यावहारिकता।

प्रस्तावना

सात्विकता का व्यापक परिवेश

मानवता की संकल्पना और उससे जुड़े यथार्थ का समग्र स्वरुप जीवन की शुचिता द्वारा चहुँ ओर देदीप्यमान होता है जिसमें श्रेष्ठ मानव व्यवहार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्तिगत जीवन के सन्दर्भ में व्यापक अवधारणा और समालोचना की दृष्टि से की गयी व्याख्या इस बात पर बल देती है कि जीवन की शुचिता मानवीय मूल्य की वह वह पराकाष्ठा है जिसमें सात्विकता का विशाल परिवेश विहंगम रूप से परिलक्षित होता है। अब जीवन की सर्वोच्च विचारधारा से प्रवाहित ' श्रेष्ठ मानव व्यवहार ' के सम्मुख एक यक्ष प्रश्न उपस्थित होता है जिसमें यह सत्य निहित होता है। कि व्यवहार की श्रेष्ठता , व्यक्तिगत जीवन की शुचिता को कैसे बनाये रखने में अपना विशिष्ट योगदान देती है ? यह एक उच्च चिंतन की महान परिणिति है जिससे अहिंसक जीवन - शैली के निर्माण में सकारात्मक रूप से सदा मदद प्राप्त होती रहती है। व्यक्तिगत जीवन की व्याख्या में जीवन की शुचिता को उच्चता की श्रेणी में स्वीकार करते हुए विश्लेषित किया जाता है तो ज्ञात होता है कि निजी जीवन का पवित्रतम भाव इसमें समाहित है तथा इसके व्यावहारिक जगत के क्रियान्वयन हेतु मानव व्यवहार का प्रस्तुतिकरण अत्यधिक अनिवार्य पक्ष है जो जीवन की सात्विकता को बनाये रखने हेतु निरन्तर प्रेरणा प्रदान करता रहता है। अतः जीवन की शुचिता को पूर्ण रूपेण समृद्धशाली एवं संबल स्वरुप प्रदान करने में उपलब्धिपूर्ण सफलता तभी प्राप्त हो सकेगी, जब व्यक्ति के द्वारा स्व - मूल्यांकन से दूसरों के समक्ष किये गए व्यवहार को अनुभूति की कसौटी पर उतारकर स्वयं के मानस पटल से निष्पक्षता के मानदंड को अपनाकर एवं संवेदनशीलता के सानिध्य में कर्तव्यों को व्यावहारिक जगत के लिए अंतिम दिशा - निर्देश के रूप में क्रियान्वित कर सकेगा जिससे जीवन की शुचिता को श्रेष्ठ मानव व्यवहार की पूरकता के रूप में सहज ही सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो जाएगी।

अंतर्मन की अभिप्रेरणा

एक मनुष्य के रूप में अपने जीवन के प्रांगण को सात्विकता से भरपूर रखने की चाहत धीरे - धीरे व्यक्ति से श्रेष्ठ व्यवहार को जीवन में क्रियान्वित करने के लिए अंतर्मन को अभिप्रेरित कर दिया करती है। जीवन की शुचिता को सुरक्षित रखने का मनोभाव व्यक्ति को सदैव 'सत्यता ' के प्रति प्रगाढ़ता के अनुग्रह को संप्रेषित करता है ताकि इस गुण - मूल्य में किसी प्रकार से कभी भी समझौते की गुंजाइश नहीं रह सके। मानव जीवन का अति सूक्ष्म पक्ष जिसमें जीवन की शुचिता को सदा विद्यमान रखने हेतु व्यक्ति द्वारा व्यावहारिक जगत में किया जाने वाला वह श्रेष्ठ व्यवहार है जिसका योगदान जीवन के विभिन्न रहस्यमयी स्वरुप में निहित होता है क्योंकि इस सात्विकता के कारण ही शेष गुणों एवं शक्तियों का आगमन सुनिश्चित हो पाता है। जीवन की शुचिता मनुष्य के लिए वह पवित्रतम भाव है जिसकी सात्विकता को पूर्ण सत्यनिष्ठा से आत्मा की मूल संस्कृति के रूप में स्वीकार करते हुए कर्म क्षेत्र की कुशलता को अक्षुण्य बनाये रखने का पुरुषार्थ किया जाता है। श्रेष्ठ मानव व्यवहार व्यक्तिगत जीवन की अहिंसक कार्य प्रणाली होती है जिसे व्यक्ति लोक व्यवहार द्वारा निभाते हुए जीवन चर्या को सम्पूर्ण तरीके से अनुशासित करने का अधिकतम प्रयास करता रहता है।

मानव जीवन में उत्पन्न होने वाली सकारात्मक एवं नकारात्मक स्थितियां कई बार व्यक्ति को विरोधभासी स्थिति में भी लाकर खड़ा कर देतीं हैं लेकिन मानव व्यवहार की उच्चतम गरिमा बनाये रखकर जीवन की शुचिता को आहत होने से बचाया जा सकता है। बाह्य जगत के झंझावात के पश्चात् भी जीवन के अनुक्रम में स्वयं की आंतरिक अभिप्रेरणा सदा इस श्रेष्ठ विकल्प के प्रति निष्ठावान रहती है जिसमें जीवन की शुचिता को शिखर पर स्थापित करने हेतु श्रेष्ठ मानव व्यवहार से किसी भी स्थिति में कोई समझौता नहीं करने की व्यावहारिक सलाह प्रदान की जाती है जिससे व्यक्ति भविष्य में कमश : स्वयं को ऊँचा उठाते हुए श्रेष्ठता के मार्ग पर गतिशील रह सके।

स्वयं के प्रति अहिंसक व्यवहार

जीवन की शुचिता को स्वयं के संदर्भ में आंकलन करने पर यह ज्ञात होता है कि सामान्यत: व्यक्ति स्वयं की ज्ञान इन्द्रियों एवं कर्म इन्द्रियों ससे स्वयं के प्रति पवित्र – दृष्टि , श्रवन , वाणी , विचार एवं पवित्र कर्म की व्यावहारिकता को निभाने में सफल नहीं हो पाता है जिसके परिणाम उसे दूसरे व्यक्तियों से व्यवहार करते समय भी आंतरिक पश्चाताप से मन ही मन गुजरना पड़ता है और एक गहरी उदासी अन्तःकरण में घोर निराशा को जन्म देने का कारण बन जाती है। अब यह प्रश्न उठता है कि एक व्यक्ति , अपने जीवन में ज्ञान , योग , धारणा एवं सेवा की गहराई में जाने के बावज़ूद भी स्वयं एवं सर्व के प्रति न्याय संगत स्थितियों के परिणाम को निर्मित क्यों नहीं कर सका ? जिससे आत्मा के पुरुषार्थ की न्यूनतम अपेक्षा से जुड़े हुए सहज पक्षों का तर्क - संगत समाधान व्यावहारिक जीवन में संभव हो पाता। कई बार धर्म - कर्म की विभिन्न स्थितियों का अनुपालन करते हुए जीवन की मान्यताएं इस सत्य को सम्पूर्ण सत्यता से स्वीकार कर लेती हैं जिसमें निजता के साथ अन्य व्यक्तियों के प्रति सद्व्यवहार की उज्ज्वलता को जीवन के पुण्य से सम्बद्ध करते हुए ग्रहण किया जाता है। मानव जीवन का आध्यात्मिक पुरुषार्थ स्वयं के उत्थान को प्रकट करता है तथा एक तुलनात्मक अध्ययन के मार्ग को इस प्रकार से प्रशस्त करता है जिसमें मनुष्य जीवन के पुण्य का उदय होना तथा क्षीण हो जाना , व्यक्ति के पुरुषार्थ में किसी भी प्रकार से बाधक अथवा साधक नहीं बनता है। स्वयं के लिए सात्विकता का परिदृश्य आत्मिक उन्नति के प्रति निष्ठावान होता है जिसमें साधक अपनी साधना में ' कार्य - कारण परिणाम ' तथा अनजाने में उत्पन्न सूक्ष्म अभिमान से मुक्त हो जाता है और निजी एवं सार्वजानिक जीवन के प्रति सम्पूर्ण अहिंसक भाव से भरा हुआ उसका मन , बुद्धि एवं संस्कार अंततः श्रेष्ठ मानव व्यवहार के रूप में परिलक्षित होने लगता है। व्यक्तिगत जीवन का पवित्र प्रसंग आत्मा के स्वमान से अनुप्राणित वह उच्च स्वरुप है जिसमें स्वयं के प्रति अहिंसक व्यवहार का परिणाम राजयोग के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि इस प्रक्रिया में आत्मा का संबंध परमात्म सत्ता से अभिभूत होकर श्रेष्ठ मानव व्यवहार के रूप में परिणित होता है जो जीवन की शुचिता को अक्षुण्य रखने में पूर्णत: सहायक रहता है।

जीवन की शुचिता का नैसर्गिक धर्म

मानवीय स्वभाव की विवेचना का मूल धर्म जीवन की शुचिता से जुड़ा होता है जो व्यक्ति को अनेकानेक बार यह बताने की चेष्टा करता है कि ' स्वयं की पवित्रता ' को किसी भी स्थिति में बनाकर रखना है तथा अचानक उत्पन्न हुए व्यवधान की स्थिति में बचाकर भी रखना है क्योंकि स्वयं की रक्षा का यह भाव आत्मा की पवित्रता के नैसर्गिक धर्म का मूलभूत रूप से केंद्र बिंदु होता है। जीवन का श्रेष्ठ धर्म अर्थात् स्वयं की शुचिता को उसके वास्तविक स्वरुप के साथ अक्षुण्य बनाए रहने का ' उच्च - भाव ' व्यक्ति को आत्मिक संतुष्टता प्रदान करता है जो इस बात का प्रमाण होता है कि आत्मा ने अपने निजी गुण - धर्म को जीवन के मर्म से सम्बद्ध करके रखा हुआ है। यदि आत्मा स्वयं की पवित्रता को विभिन्न परिस्थितियों के मध्य अखंड बनाकर रखने में पूर्णतया सफल हो जाती है तब व्यक्तित्व की गरिमा जीवन के व्यवहार में स्वयं के कृतित्व को गौरवान्वित तरीके से स्वीकार करते हुए जीवन के स्थायी अस्तित्व को सामाजिक जीवन में रेखांकित कर पाती है। जीवन की शुचिता का व्यावहारिक पक्ष श्रेष्ठ मानव व्यवहार की वह शक्तिशाली स्थिति होती है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अलग - अलग व्यवहारगत स्वरुप में भी आत्मा की पवित्रता के प्रति संवेदनशील रहता है तथा जिस व्यवहार को उसे लोकाचार की दृष्टि से उसे करना पड़ता है वह उसे संबंध बनाने और मानवता के साथ संबंध निभाने की सात्विकता से सदैव जोड़कर ही स्वीकार करने का प्रयास करता है। आत्मा का वास्तविक धर्म पवित्रता का व्यापक स्वरुप है जो जीवन की शुचिता द्वारा प्रस्फुटित होता है जिसे श्रेष्ठ मानव व्यवहार से जानने एवं मानने का प्रयास किया जाता है परन्तु कभी - कभी मानव व्यवहार की लघुता अथवा न्यूनता की स्थितियों में व्यक्तिगत दोष देने की बजाए आत्मा को कलुषित भाव के साथ कोसने का प्रयास किया जाता है जो उचित नहीं होता है। आत्मिक शुचिता के द्वारा अंततः व्यवहार की गरिमा को संतुलित बनाए रखने की कोशिश अंतिम स्थिति तक आत्मा के द्वारा की जाती है लेकिन मानव की असफलता के पश्चात् पुन : जीवन की शुचिता के लिए मूल्यांकन एवं परिवर्तन का कार्य आत्मा के माध्यम से आरंभ हो जाना आत्मा के नैसर्गिक धर्म की सुखद परिणिति होती है।

जीवन की सात्विकता का अध्यात्म

मानव जीवन की शुचिता को स्थापित करते हुए स्थायित्व प्रदान करने के लिए निजी प्रयास के द्वारा स्थूल संसाधनों से स्वयं को तथा अन्य व्यक्तियों को ख़ुशी देने का भाव व्यक्ति को अल्प कालीन सुख तो देता है लेकिन दीर्घ कालीन अवस्था तक बनी रहने वाली जीवन की सात्विकता और उससे उपजी शांति एवं संतुष्टि अंतर्मन को विभिन्न रूप से प्रभावित भी करती है सामान्यत: व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला व्यवहार उसके अंतस की शुचिता के विविध आयाम को परिभाषित करते हुए आत्मा की पवित्रता को व्यावहारिक विधि से संप्रेषित भी करता है जिससे जीवन की सात्विकता का अध्यात्म अपने वास्तविक स्वरुप में समाज के सन्मुख मुखरित हो पाता है।

जीवन की शुचिता का सामाजिक पक्ष व्यक्ति को पुण्यों की पहल के लिए अभिप्रेरणा प्रदान करने में मददगार साबित होता है जबकि मनोवेज्ञानिक दृष्टिकोण मनुष्य को महान आत्मा बन जाने के लिए मार्ग दर्शन प्रदान करता है जिससे श्रेष्ठ मानव व्यवहार की संकल्पना को बल प्राप्त हो जाता है और वह स्वयं के उजलें स्वरुप की ओर गतिशील होते हुए जीवन दर्शन की सत्यता को स्वीकार करके देव आत्मा की विराटता की दिशा में अग्रसर हो जाता है। व्यक्तिगत जीवन की ऊँचाई का पोषण करने के लिए श्रेष्ठ मानव व्यवहार का आधार सदैव अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है जिसमें मनुष्यगत प्रार्थनाएं चहुँ दिशाओं से ' श्रेष्ठता ' के आगमन का आह्वान करती हैं जिनका आधारभूत स्वरुप - उच्चकोटि के मनुष्यगत व्यवहार प्रेरणादायी घटनाएं , मौलिक विचार एवं पवित्र भावनाओं का विशिष्ट आभामंडल होता है। इस प्रकार आत्मिक आत्मिक जगत की उत्कंठा का पवित्रतम परिदृश्य इतना विशाल होता है कि आत्मा पुनर्जन्म की प्रक्रिया और उसकी क्रमबद्धता में केवल पवित्र हो जाने की तीव्रतम उत्कंठा से गुज़रती है जिसकी सुखद परिणिति आत्म अनुभूति के गहन स्वरुप से होते हुए परमात्म अनुभूति के चरम उत्कर्ष को प्राप्त कर लेने के दुर्लभ संयोग से सृजित होकर जीवन की सात्विकता के अध्यात्म का नवीन अध्याय अर्थात् श्रेष्ठ मानव व्यवहार को व्यावहारिक जीवन में आरंभ कर देती हैं।

उपसंहार

इस शोध आलेख के अंतर्गत जीवन की शुचिता को बनाए रखने में श्रेष्ठ मानव व्यवहार के योगदान को विभिन्न दृष्टिकोंण से अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है जिसमें मनुष्य के द्वारा संजोई गयी स्वयं की सात्विक अवस्था को ' धर्म सम्मत श्रेष्ठ व्यवहार ' की उपमा प्रदान की गयी है जो व्यक्ति के द्वारा सम्पूर्ण जीवन काल में समस्त विरोधाभास के पश्चात् भी आत्मिक पवित्रता को अक्षुण्य रख पाना व्यक्तिगत जीवन की ' सफलता से उपलब्धि ' तक के आयाम को सबसे बड़ी चुनौती के रूप में स्वीकार किया गया है। सृष्टि के प्रत्येक मानव अपने अद्वय साहस एवं इच्छा शक्ति अनुसार सर्व - जन प्रति ' श्रेष्ठ मानवीय व्यवहार ' करने का प्रयास स्वयं के स्तर पर निरंतर करता रहता है परन्तु अतीत की घटनाएं , व्यक्ति विशेष द्वारा आपस में किए गए व्यवहार , स्वयं की समझ एवं आत्म शक्ति द्वारा उद्धत मनोबल से वह अपने वर्तमान व्यवहार का चयन कर उसे व्यावहारिक रूप में प्रकट कर पाता है जो उसके कर्मक्षेत्र के दौरान उपजाई गयी पूंजी स्वरुप में , जीवन की शुचिता के साथ श्रेष्ठ मानव व्यवहार का रूप धारण कर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विधि से प्रकट होती है। एक विवेकवान एवं जागरूक मनुष्य सदैव स्वयं के जीवन में घटित प्रत्येक घटना एवं समस्या का गहन रूप से चिंतन , दृश्यावलोकन तथा समालोचनात्मक अध्ययन

करते हुए जीवन लोक में विचरण करता है जो उसके जीवन की निष्पक्षता का जीवंत प्रमाण होता है और यही वास्तविक शक्ति - ' जीवन की शुचिता को श्रेष्ठ मानव व्यवहार ' के रूप में अपनाने के लिए सर्व व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान करने में पूर्णत: सहायक होती है।

जीवन की शुचिता जब अपने उच्चतम स्वरुप में कार्यरत रहती है तब वह मानवता को ' श्रेष्ठ मानव व्यवहार ' द्वारा मानवीय मूल्यों से सुसज्जित करने की श्रृंखला से आबद्ध रहती है जो आत्मा की पवित्रता को अखण्ड स्वरुप में अक्षुण्य बनाये रखने का विशिष्ट आधार होता है। जीवन में व्यक्तियों के प्रति मानव का नैसर्गिक व्यवहार , जीवन पर्यंत सात्विकता को बनाए रखने में महत्ती भूमिका निभाता है जिससे जीवन की शुचिता निष्पक्षता के साथ गतिशील रहते हुए आत्मा की पवित्रता को अक्षुण्य रखने में सफ़ल हो जाती है। सकारात्मक दृष्टिकोंण का निर्वहन आत्मिक उत्थान के श्रेष्ठतम पुरुषार्थ में व्यक्ति को साहस के साथ नैतिक मूल्य को अपनाते हुए सर्वोच्च शिखर की ओर बढ़ जाने के लिए प्रेरित करता है जो मानव जीवन की शुचिता को समृद्धशाली बनाने की प्रक्रिया से सदा जुड़ा रहता है । जीवन की शुचिता मानव आत्मा की पवित्रता से प्रवाहित वह ' सत्व ' है जिसे जीव जगत में अनेकानेक मनुष्य आत्माओं ने विविध विधायों में निपुणता के उच्च आयाम को स्पर्श एवं दीर्घ अवधि तक विराजमान रहते हुए अपने व्यक्तित्व , कृतित्व और अस्तित्व की शंखध्वनी से प्रकृति के अटल नियमों की भांति स्वयं को आलोकित कर सर्व को भी प्रकाशवान किया है जिससे श्रेष्ठ मानव व्यवहार के क्रियमाण को सदा ही जगत में समादर प्राप्त होता रहेगा। अतः मानव जीवन की समग्रता का विशिष्ट अध्ययन जब आत्मिक पवित्रता की सूक्ष्मता के सन्दर्भ में जीवन की शुचिता के विभिन्न प्रसंगों को उसके यथार्थवादी स्वरुप में विश्लेषित करता है तब जीवन की शुचिता अपने उच्च भाव में कार्यरत रहते हुए ' श्रेष्ठ मानव व्यवहार ' को उसके गरिमामयी स्वरुप में क्रियान्वित करने की दिशा में पूर्ण उमंग - उत्साह के साथ अग्रसर होती है।

संदर्भ

1. गोयन्दका, जयदयाल (1923) 'आध्यात्मिक प्रवचन' , चौदहवां पुनमुद्रण , गीता प्रेस, गोरखपुर (गोविन्द भवन - कार्यालय , कोलकाता का संस्थान) 273005
2. विदेहत्मानंद, स्वामी (2002) स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान, अद्वैत आश्रम (प्रकाशन विभाग) 5, डीही एटाली रोड कोलकाता – 400014
3. कारनेगी, डेल (2003) लोक व्यवहार 'प्रभावशाली व्यक्तित्व की कला ' मंजुल पब्लिशिंग हाउस , अनुवाद : डॉ सुधीर दीक्षित, 7 /32, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
4. प्रसाद, भ. (1980) मनीषी की लोकयात्रा. वाराणसी : महामहोपाध्याय पंडित (गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) प्रकाशक – विश्वविद्यालय।
5. भावे, संत विनोवा. (1978) गीता प्रवचन, वाराणसी: प्रकाशन - सर्व सेवा संघ, राजघाट, संस्करण - 30, मार्च।
6. लॉक , जान (1981) ' मानव बोध ', जयपुर : हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण।
7. वैकटरामैया, मु. (1998) श्री रमण महर्षि से बातचीत. आगरा: प्रकाशक शिव लाल एड अग्रवाल कंपनी, आगरा।
8. शर्मा, पंडित श्री राम (1998) वाड्मय, साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान, मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान. द्वितीय संस्करण।
9. शुक्ल, अजय , (2009) व्यवहार , संबंध और व्यावहारिकता , भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था।
10. शुक्ल , अजय (2010) परिवर्त्तन की अंतर्दृष्टि , भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक : मानवीय विकास संस्था।
11. शुक्ल अजय (2011) विकास का मनोविज्ञान , भोपाल (म. प्र.) , प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था।
12. शुक्ल, अजय (2012) जीवन के सृजनात्मक पक्ष, भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक; मानवीय विकास संस्था.
13. शर्मा, दिनेश चंद, माह – जून (2017) 'परोपकारी' पाक्षिक पत्रिका, प्रकाशन अवधि ; वर्ष – 58 , परोपकारिणी सभा, दयानंद आश्रम, केसर गंज, अजमेर (राजस्थान) - 305001
14. भगेरिया, दामोदर, जुलाई - अगस्त (2013) 'गीता से जुड़े' (आध्यात्मिक द्विमासिक पत्रिका) 13, ऍम. जी .डी मार्किट, जयपुर - 02
15. सिंह, नामवर, जनवरी - मार्च (2013) 'आलोचना' त्रेमासिक पत्रिका, मैत्री शांति भवन, फ्लैट नं: - 4, बी . ऍम . दास रोड , पटना (बिहार) - 800 004
16. शल्य , यशदेव एवं लाठ, मुकुंद, जुलाई (2015) उन्मीलन, मानसिक हिन्द स्वराज का वैतालिक दार्शनिक षड्मासिक , दर्शन प्रतिष्ठान, पी – 51 मधुबन पश्चिम , किसान मार्ग, जयपुर – 302015